E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
Impact Factor (RJIF): 5.92
IJPSG 2025; 7(9): 32-34
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 14-07-2025
Accepted: 17-08-2025

अनीता कुमारी
विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार भारत

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार भारत

Corresponding Author:
अनीता कुमारी
विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार भारत

भारतीय परम्परा के सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता का आधुनिकीकरण: एक अध्ययन

अनीता कुमारी और डॉ. नीलम कुमारी

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i9a.662

सारांश
आधुनिकतावाद एक मूल्यपरक एवं गुणात्मक गात्मक श्रेणी है। जो जटिल परंपराओं एवं समस्याओं की ऐतिहासिक यात्रा की वह देन है, जिसके तहत परंपरा पर आधारित विचारों, सिद्धांतो एवं सांस्कृतिक मूल्यों के जगह पर वैज्ञानिकता एवं तार्किक आधार को प्रतिस्थापित किया गया। सामान्य अर्थो मे आधुनिकता का अभिप्राय सामाजिक संरचना एवं मूल्यों में परिवर्तन अथवा नए मूल्यों एवं नई सोच के जन्म से है, खुले तौर पर कहा जाए तो प्राचीन काल से समाज में व्याप्त परंपराओं, मान्यताओं एवं रीति–रिवाजो से हटकर सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में नए .ष्टिकोण को अपनाना ही आधुनिकता है और नवीन .ष्टिकोण पर आधारित आधुनिकता की यह अवधारणा आधुनिकतावाद कहलाती है। भारतीय सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता के संदर्भ आधुनिकीकरण का अभिप्राय उन्हीं नवीन चिंतनों एवम् पारंपरिक बदलावों से है जिसका आधार निःसंदेह ही वैज्ञानिक व तर्क युक्त था। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की वह परंपरा जो रीति–रिवाजों एवम् प्राचीन काल से समाज में व्याप्त मान्यताओं के आधार पर प्रतिस्थापित था। वह 18वीं शताब्दी के मध्यांतर तक आते–आते वैज्ञानिकता व तर्क आधारित तथ्यों को तरजीह देने लगा। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय परंपरा के सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता में एक नये आवधारणा के रूप में आधुनिकीकरण का प्रादुर्भाव था।

कुटशब्दः परंपरा, तार्किक, अवधारणा, नवीनता, मान्यता।

प्रस्तावना
इस तरह से आधुनिकतावाद का अभिप्राय सामाजिक संरचना एवं मूल्य में परिवर्तन या फिर नए मूल्यों एवं एक नई सोच का जन्म से संबंधित है। हालांकि आधुनिकता का उद्भव पश्चिमी देशों में खासकर यूरोपीय देशों के संदर्भ में किया जाता है जहाँ नवीन खोज की शुरुआत का परिणाम आधुनिकता माना गया। सामन्यतः आधुनिकता का अर्थ स्थापित नियमों, परंपराओं एवं मान्यताओं से अलग हटकर विश्व में मनुष्य की स्थिति एवं इसके कार्य के प्रति नवीन .ष्टिकोण को अपनाना है। अर्थात प्राचीन काल से चली आ रही परंपराओं, मान्यताओं एवं नियमों को छोड़कर नवीनता भरी .ष्टि को स्वीकार कर लेना ही आधुनिकता है। दूसरे शब्दों में आधुनिकतावाद का अर्थ पारंपरिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, और प्रजाति समुदायों के बीच के अंतर को समाप्त कर देना है। मैक्स बेबर ने 'आधुनिकता को व्यक्ति एवं समाज के सदा से चले आ रहे स्वरूप को मिलने वाली एक स्पष्ट स्वीकृति के रूप में माना है।' वहीं आधुनिक समाज को केंद्र में रहकर पीटर बर्जर ने कहा की 'आधुनिक समाज व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कुछ ऐसी गारंटी करता है जिससे समाज में जीने वाला आधुनिक व्यक्ति अपने आप को पारंपरिक समाज में जीने वाले लोगों से अलग समझता है।' आधुनिक व्यक्ति जो सामाजिक भूमिकाओं एवं संस्थाओं की पारंपरिक संरचनाओं से अपने आप को मुक्त कर चुका है, एक नग्न व्यक्तित्व की तरह होता है जो संस्थागत भूमिकाओं से स्वतंत्र है।
भारतीय सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में आधुनिकीकरण का प्रभाव 18 वीं शताब्दी का मध्यांतर माना जाता है। आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की वह बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत समाज के सभी क्षेत्र जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीति के स्वरूप में बदलाव अपने आप ही हो जाती है साथ ही साथ यह पूर्व से विद्यमान सभी परंपरागत तथ्यों में परिवर्तन करने की घोषणा करता है। ज्ञानबोधात्मक शिक्षा इसकी सबसे महत्वपूर्ण मुख्य शर्त है जो पारंपरिक प्रथाओं पर चोट करता है। भारतीय समाज में प्रतिस्थापित अंधविश्वास, जातिवाद, संप्रदायवाद, प्राचीन रीति रिवाज, धार्मिक आबंडर जैसे पारंपरिक प्रथाओं के जगह अनुभववाद, विज्ञान, प्रगति, स्वतंत्रता एवं सार्वभौमिकता को स्थापित करने की वकालत ही आधुनिकतावाद है।

हालाँकि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के संदर्भ में आधुनिकीकरण की यह रफ्तार अन्य यूरोपीय राष्ट्रों की अपेक्षा काफी कम रही जैसे कि ब्रिटेन में औद्योगिकरण और इंग्लैंड फ्रांस तथा अमेरिका में राजनीतिक क्रांतियों ने पूंजीवाद, नागरिकता, लोकतंत्र और विकास के नए मूल्यो को प्रतिस्थापित किया। अर्थात इन सभी ने प्रगतिशील विकास या आधुनिक प्रक्रिया का नेतृत्व किया। इस संदर्भ में जेम्स वो कानवेल ने आधुनिकीकरण को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि 'जिसके माध्यम से एक पारंपरिक या एक पूर्व आधुनिक समाज गुजरता है, तब वह समाज मशीन प्रौद्योगिकी, तार्किकता और धर्मनिरपेक्ष .ष्टिकोण को अत्यधिक विभेदित करने वाला सामाजिक परिवर्तन होता है जिसका मतलब यह था कि 'पश्चिमी राजनीति' और 'आर्थिक संस्थानों' के मॉडल को अपना लेना।' वही डेनियल लर्नर के अनुसार 'आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जिसके तहत कम विकसित समाज अधिक विकसित समझो कि विशेषताओं को अपना कर स्वयं में परिवर्तन आते हैं, यह प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय संचारों द्वारा सक्रिय होती है। आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है, जिसमें विकास आर्थिक मानदंड से नापा जाता है इसका तात्पर्य वैसे सामाजिक प्रक्रिया से है जो एक ऐसा वातावरण तैयार करती है जिसमें प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ता है और सामाजिक स्तर अपने आप ही परिवर्तित होते हुए परीक्षित होता हैं।' ठीक इसी प्रकार साम्राज्यवाद के दौर में जब भारतीय समाज ब्रिटेन का उपनिवेश था तो इंग्लैंड के जुल्सफेरी ने कहा था कि 'असभ्य को सभ्य बनाने की जिम्मेवारी गोरो जातियों पर है' तब उनके कहने का तात्पर्य वैसे

.ष्टिकोण से था जो भारतीय समाज में व्याप्त पारंपरिक प्रथाओं एवं रीति–रिवाज के जगह पर एक नवीन सोच एक नवीन चिंतन को विकसित कर अवधारणात्मक प्रतिस्थापन से था।

इस संदर्भ में हंटिंग्टन ने 'द चेंज टु चेंजः मॉडर्नाइजेशन डेवलपमेंट एंड पालिटिक्स' नामक निबंध के माध्यम से श्आधुनिकीकरण को एक निहितार्थ विकास, ग्रामीण कृषि संस्कृतियों को शहरी औद्योगिक संस्कृतियों में बदलाव लाने वाली एक क्रांतिकारी प्रक्रिया के रूप में माना है।' जबकि एल्विन टॉफलर ने 'आधुनिकीकरण को 'फर्स्ट वेब' यानी (कृषि समाज) से सेकंड वेब यानी (औद्योगिक समाज) में परिवर्तन करने वाली एक सकारात्मक कदम माना है।'

हालांकि राजनीति के संदर्भ में आधुनिकीकरण की अवधारणा का यथार्थ स्पष्ट कर पाना उतना आसान नहीं जितना सामाजिक एवम दार्शनिक स्तर पर। फिर भी जिस तरह से आधुनिकीकरण का प्रयोग आमतौर पर राजनीतिक .ष्टिकोण मे परिवर्तन एवं राजनीतिक संस्थाओं के रूपांतरण के संदर्भ में किया जाने लगा है उससे अवश्य ही एक ऐसा बदलाव देखने को मिला जिससे राजनीतिक चिंतक ने नवीन आयाम के प्रयोग के साथ–साथ राजनीतिक प्रणाली मे भी काफी हद तक नवीनता लाने का यथासंभव प्रयत्न किया है। यही कारण है कि पारंपरिक राजनीतिक प्रणाली आधुनिकता के स्तर पर परिवर्तित एक नई प्रणाली के रूप में .ष्टांत हुयी। इस तरह राजनीति में आधुनिकीकरण की अवधारणा ने पारंपरिक राजनीतिक प्रणाली से आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवर्तन को संदर्भित किया और 19वीं शताब्दी के मध्यांतर अवधि में राजनीतिक आधुनिकरण एक प्रमुख .ष्टिकोण के रूप में उभरा जो राजनीतिक व्यवस्था के साथ–साथ सामाजिक जीवन पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ी। जहां धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तर को प्रभावित करने वाले कई विचारधाराओं को परिलक्षित किया गया। आधुनिकीकरण ने उदारवाद व्यक्तिवाद, धर्मनिरपेक्षता और औद्योगीकरण जैसे कई आधुनिक विचारों को संरक्षण प्रदान किया। इस प्रक्रिया में धर्म एवम चर्च के द्वारा सत्ता पर चल रहे प्रभुत्व को समाप्त कर एक केंद्रीय सत्ता जैसे आधुनिक विचारधारा को संदर्भित किया गया। इतना ही नहीं इस .ष्टिकोण के साथ राजनीतिक

संस्कृति और ग्रामीण शहरी सामाजिक जीवन में अप्रत्याशित बदलाव हुए। अनुशासन के तौर पर अगर देखा जाए तो इस . ष्टिकोण का प्रादुर्भाव ही बौद्धिक चेतना का प्रतिफल था, जिसने व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार के तत्वाधान में प्रगति हेतु मनोविज्ञान समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र पर आधारित राजनीति के मुख्य सैद्धांतिक क्षेत्र में खुद को प्रतिस्थापित किया। राजनीतिक . ष्टिकोण से देखा जाए तो आधुनिकीकरण का सिद्धांत आरंभ से ही मुख्य दो विचारधाराओं में बांटा हुआ है एक एक तरफ मार्क्सवादी विचारधारा जिसने आधुनिकीकरण को अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति को घनिष्ठ रूप में एक दूसरे के साथ बंधा हुआ मानते हैं जहां आर्थिक विकास समाज की राजनीतिक और संस्कृत मूल्य के परिवर्तन का आधार माना है।

भारतीय परंपरा के संदर्भ में आधुनिकीकरण सामाजिक स्तर पर दो स्वरूप में दिखाई पड़ता है एक जो परंपरा से मुक्त समाज है। और दूसरा जो परंपरा से बंधा हुआ समाज है जहां परंपरा मुक्त समाज ने पुरानी मान्यताओं प्रथाओं एवं नियमों का त्याग कर वैज्ञानिक आधारित ज्ञान उत्तर को स्वीकार करता है और इस आधुनिकता को ग्रहण करने वाले वैश्य समाज मुख्यतः शहरीकरण के विकास के पैमाने को समझने वाले हैं, जिसने विकास, प्रगति एवं नवीन सोचो को अंगीकार कर लिया है, जबकि पारंपरिक समाज ने परंपरा से चले आ रहे सामाजिक मूल्यों मान्यताओं और प्रथाओं को अब तक नहीं त्यागा है, उनकी सामाजिक जीवन शैली का आधार वही पुरानी प्रथाएं हैं जैसे कि भारतीय सामाजिक संरचना के परिप्रेक्ष्य में देखे तो ग्रामीण स्तर पर बसर कर रही जीवन शैली आज भी परंपराओं पर आधारित है खासकर आदिवासी जनजातीय समूह इस प्रकार की परंपराओं से खुद को मुक्त नहीं कर पाए हैं निर्णय लेने की क्षमता यहां व्यक्तिगत ना होकर समाज के प्रथाओं और मान्यताओं के अनुकूल है यद्यपि लोकतंत्र जैसा आधुनिक राजनीतिक विचार इन पारंपरिक बंधनों एवं प्रथाओं से मुक्त होने का साहस प्रदान करता है। क्योंकि भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित है जिनके आधार ही धार्मिक है इस कारण समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा वैज्ञानिक तथ्यों के स्थान पर दैवी मान्यताओं को ही सब कुछ मानता है उनके लिए पूर्व से चली आ रही रीति रिवाज प्रथाएं एवं मान्यताएँ ही सब कुछ हैं, जिसे वह निकालना नहीं चाहते ऐसे समाज आधुनिक के लिए आधुनिक होने का सामान्य मतलब जहां पहनावा खान–पान रहन–सहन इत्यादि ही होता है और इसी का आधार मानकर उनका विरोध करते हैं। आधुनिक जो अंग्रेजी के 'मॉडर्न' शब्द के रूप में जाना जाता है को नकारात्मक रूप में अस्वीकार करते हैं, लेकिन ग्रामीण स्तर से प्रगति और विकास के राह पर चलकर परिवर्तित होने वाला शहरीकरण समाज आधुनिकतावाद को सकारात्मक रूप में सहर्ष स्वीकार किया है वह आधुनिकता को नवीन मानवीय सोच के रूप में देखते हैं जिनके आधार प्रगतिवादी है व्यक्तिगत व स्वतंत्रता निर्णय लेने की व्यक्तिगत क्षमता सोच तथा इन्हीं आधारों पर वैज्ञानिक एवं तर्कशील तथ्यों का अनुसरण कर वे भारतीय समाज में व्याप्त पारंपरिक प्रथाओं और मान्यताओं को त्यागे जा रहे हैं नवीन मानसिक सोच से लेकर रहन–सहन के ढंग तक को आधुनिकता का अमली जामा पहनकर शहरीकरण की प्रवृत्ति को और भी विकसित कर रहे हैं। ऐसा समाज पारंपरिक प्रथाओं व मान्यताओं को व्यक्तिगत विकास व प्रगति का बाधक मानता है। धार्मिक मूल्यों और सांस्कृतिक बंदों के आवन को आडंबर मानता है, हालांकि समाज का कुछ हिस्सा ऐसा भी है जो परंपराओं के साथ–साथ नई सोच व वैज्ञानिकता के महत्व को स्वीकार करता है। भारतीय ग्रामीण समाज और पूर्व से आ रही शहरीकरण के द्वंद्व के बीच भारतीय परंपरा आधुनिकीकरण की अवधारणा को

गतिशीलता तो अवश्य प्रदान की है परंतु उनकी रफ्तार जरा धीमी है। चूँकी तार्किकता ही आधुनिकता का मुख्य आधारशिला है और इसी तार्किकता के फल स्वरुप तटस्थता के .ष्टिकोण का विकास होता है, क्योंकि युक्ति संगत तर्क से ही निर्धारित लक्षण की पूर्ति होती है, जिसे समझने एवं सोचने की शक्ति में विकास होता है। यही कारण है कि आधुनिकतावाद की अवधारणा को मानव जन चेतना द्वारा अपने सामाजिक स्वरूप में स्वीकार किया गया। भारतीय राजनीति के संदर्भ में अगर आधुनिकतावाद को देखा जाए तो की निःसंदेह ही आधुनिकतावाद ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। प्राचीन काल में राजनीतिक व्यवस्था की परिपाटी जो दैवीय एवं धार्मिक मानदंडों पर संचालित होती थी एवम् के साथ राजनीतिक प्रणालियों पर धार्मिक आडंबरों का बोलबाला था, वह आधुनिकीकरण के प्रभाव में आते ही परिवर्तित हो गया। राजनीतिक आधार पर आधुनिकीकरण को समाज के दोनों स्वरूपों द्वारा सहर्ष स्वीकार किया गया। जिसका पहला उदाहरण राजा राममोहन राय द्वारा नवजागरण के लिए 1929 में सती प्रथा के अंत के रूप में देखा जाता है। साथ ही साथ राजनीति में नवीन सोच चिंतन के फलस्वरूप आधुनिकीकरण के प्रत्येक आयाम को भारतीय समाज द्वारा सहर्ष स्वीकार किया गया से लेकर जाति विवेक की खाई तक को मिटाने वाली तर्कशीलता को स्वीकृत किया गया राजनीतिक

.ष्टिकोण से आधुनिकीकरण की अवधारणा ने भारतीय समाज में नवचेतना का काम किया। समानता, न्याय, स्वतंत्रता एवं संवैधानिक संरक्षण जैसे कई नवीन अवधारणाओं ने पारंपरिक राजनीतिक मूल्यों का त्याग कर दिया और इस तरह भारतीय राजनीतिक समाजीकरण का स्वरूप नवीन हो गया।

आधुनिकता को व्याख्यात करते हुए शील्स ने आधुनिक व्यक्ति का सांसारिक रूप चित्रित किया है यथा आधुनिक होने का अर्थ है एडवांस होना अर्थात धनी होना पारिवारिक व धार्मिक सत्ता के झमेले से मुक्त होना इसका अर्थ है। तार्किक वह बुद्धिवादी होना। यदि कोई ऐसा बुद्धि वादी हो जाता है तो उसके लिए सांसारिकता वैज्ञानिकतावाद एवं सुखवाद को छोड़कर और कोई परंपरा नहीं रह जाती है आधुनिकता की इस परिभाषा में व्यक्ति का नया रूप सामने आता है वह वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग कर सांसारिक सुख को महत्व देता है। पारिवारिक व धार्मिक सत्ता दिशा से वह दूर रहता है तार्किकता एवं बौद्धिकता के जरिए वह पारंपरिक जीवन पद्धति से अपने को मुक्त कर लेता है। सुख पूर्ण भावी जीवन के लिए वह वर्तमान में ही आयोजन कर लेता है। नए आधुनिक लेखक के अनुसार ''आधुनिक बोध का अर्थ आधुनिक .ष्टि है जो सोचने, देखने और जीने के आदतन आचरण से आप पूरी अंकूट का स्वीकार है। इसमें महत्वपूर्ण .ष्टि है जो प्राय अपने और अपने संबंधों से बाहर जाकर तटस्थ ढंग से विश्लेषण कर सकती है आधुनिक होने का अर्थ व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्थानों पर मनुष्य वर्तमान परिवेश और अद्यतन बौद्धिक आवेश से अवस्थित हो ज्ञान विज्ञान और प्रौद्योगिकी से वर्तमान में जो नवीन दिशा आया है वह आधुनिकता बोध है।'' प्रस्तुत परिभाषा से आधुनिकता की एक प्रमुख विशेषता सामने आती है वह है तार्किकता, तार्किकता के आधार पर व्यक्ति में तटस्थ .ष्टि का विकास होता है। तार्किक तटस्थ .ष्टि से वह अपने संबंधों को एवं अपने परिवेश को देखता है व्यक्ति की इस तार्किक .ष्टि एवं आधुनिकता बोध का प्रमुख कारण है ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास जबकि सुदेश पचौरी जैसे लेखक का मंतव्य है कि आधुनिकता की विचार व्यवस्था इस प्रकार चलती है राष्ट्र राज्य जो एक समाज का अंतिम रूप है, जो केंद्रीयकृत अधिरचना है। वह एक सामूहिक और आधुनिक सभ्यता की अनिवार्य इच्छा है वह एक अधिकारी है वहीं प्रतिनिधि है, वह ईश्वर की जगह लेती है वह तर्क की श्रेष्ठतम स्थित है वह इतिहास का अंतिम निछोड़ है इसमें विश्वास की जगह प्रकृति विज्ञान है रहस्य खत्म हो चुका है। विज्ञान की नवीनतम खोजो ने सभी रहस्य को खत्म कर दिया है और ईश्वर की जगह विज्ञान स्थाई हो गया है। तार्किक शक्ति इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

निष्कर्ष

आधुनिकता अर्थात एक प्रवृत्ति के रूप में एक विचारधारा के रूप में एक चिंतन के रूप में परंपरागत मान्यताओं तथा परंपरागत नियमों के विरुद्ध एक नवीन बौद्धिक एवं तार्किक जीवन शैली है ज्ञान की नई शाखों के उद्भव के कारण समाज में आया बदलाव आधुनिकता है। भारतीय समाज में आधुनिकता के प्रभाव को ठीक से समझ पाना अत्यधिक कठिन है क्योंकि भारतीय समाज में जो सामाजिक संरचना समाज व्यवस्था के संदर्भ में है वह इस प्रकार है कि वहां भारतीय समाज ने आधुनिकता के सारे आयामों को स्वीकार कर आधुनिक जीवन व्यतीत करना तो प्रारंभ कर दिया परंतु भारतीय समाज द्वारा आधुनिकता को जिस संपूर्णता के साथ खुद को आत्मसात नहीं कर पाए, क्योंकि भारतीय समाज आज भी अंधविश्वास कुरीतियां को प्रथाएं एवं पारंपरिक मान्यताओं को छोड़ नहीं पाए हैं। आधुनिकता ने निःसंदेह मानव जीवन को संपूर्ण रूप से हर क्षेत्रों में प्रभावित किया है। पुर्नजागरण एवं बौद्धिक क्रांति ने आधुनिकता जैसी अवधारणाओं को जन्म दिया, जहाँ नई सोच ने पुरानी सोंच को प्रभावित किया। साथही आधुनिक उपकरणों के द्वारा सामाजिक और राजनीतिक जीवन में काफी परिवर्तन हुए।

संदर्भ–सूची

1. सिंह एलके. सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट मॉडर्नाइजेशन. नई दिल्लीरू डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस; 1990.
2. देशमुख डी. सोशल मोबिलाइजेशन एंड पॉलिटिकल डेवलपमेंट. अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू. 1961;55;3).
3. फ्रैंक एजीण ऑन द सोशियोलॉजी ऑफ अंडरडेवलपमेंट. न्यूयॉर्करू मंथली रिव्यू प्रेस; 1970.
4. हंटिंगटन एस. पॉलिटिकल ऑर्डर इन चेंजिंग सोसाइटीज़. न्यू हेवनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस; 1968.
5. स्मिथ बीसी. अंडरस्टैंडिंग थर्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्सः थ्योरीज़ ऑफ पॉलिटिकल चेंज एंड डेवलपमेंट. लंदनः पेल्ग्रेव मैकमिलन; 2003.